

[2023] 1 एस सी आर 375

ए.

मोहिंदर पाल और अन्य बनाम

जे एंड के राज्य

(2010 की आपराधिक अपील (आईडी1) 12 जनवरी, 2023

बी.

[बी. आर. गवई और एम. एम. सुंदरेश, जे. जे.]

रणबीर दंड संहिता -s.300 अपवाद I, s.302 और s का भाग II 304 - गंभीर और अचानक उकसाना-दो व्यक्तियों की मौत, 'जे' और 'एम'-सात आरोपी-आरोप है कि नंबर 1 और उसके बेटों ने 'जे' और 'एम' को उनके घर में जबरन हिरासत में लिया और उन पर हमला किया जिसके कारण चोटों के कारण उनकी मौत हो गई-सत्र न्यायाधीश ने आरोपी संख्या को बरी कर दिया। 5 और 6 लेकिन दोषी ठहराए गए आरोपी संख्या। 1 आर. पी. सी. की धारा 4 और 7 यू/एस. 302, 148 और 149-उच्च न्यायालय ने दोषसिद्धि को बरकरार रखा-अभियुक्त नं. 1 अपील के लंबित रहने के दौरान मृत्यु हो गई जबकि अभियुक्त नं. 2 फरार हो गया-अभियुक्त संख्या की अपील पर। 3, 4 और 7, आयोजित: अभिलेख पर रखी गई सामग्री से यह प्रतीत होता है कि अपीलार्थियों साफ-सुथरे हाथों से नहीं आया है और उसने घटना की उत्पत्ति को दबाने का प्रयास किया है-'जे' की मृत्यु घोषणा के साथ-साथ पी. डब्ल्यू. 1 और पी. डब्ल्यू. 2 के साक्ष्य में विरोधाभास है कि दोनों मृतक किन परिस्थितियों में आरोपी व्यक्तियों के घर गए थे-इसके अलावा, घटना में आरोपी नंबर 1 को भी चोटें आईं-अपीलार्थियों आरोपी नंबर 1 को लगी चोट की व्याख्या करने में विफल रहा-यह आरोपी नंबर 1 का विशिष्ट मामला था कि दो व्यक्ति उसके घर आए थे और उन्होंने उस पर लाठी से हमला किया था-इस बात की संभावना है कि आरोपी नंबर 1 पर हमले से क्रोधित व्यक्तियों ने आत्म-नियंत्रण की शक्ति से वंचित होकर, गंभीर और अचानक उकसावे से हमला किया। 3, 4 और 7) एस के अपवाद I को देखते हुए संदेह के लाभ के हकदार हैं। 300 आर. पी. सी.-अभियोजन यू/एस मामले को साबित करने में विफल रहा। 302 आर. पी. सी. युक्तियुक्त संदेह से परे-अपीलार्थियों को दोषी ठहराना और सजा देना। 302 आर. पी. सी. को एस. के भाग-I के तहत परिवर्तित किया गया। 304 आरपीसी।

सी.

डी.

ई.

एफ.

जी.

आंशिक रूप से अपील को स्वीकार करते हुए, न्यायालय ने

यह अभिनिर्धारित किया कि **-1. अभिलेख पर रखी गई सामग्री से, विशेष रूप से, पोस्ट-मॉर्टम रिपोर्ट से, इस बात पर विवाद नहीं किया जा सकता है कि मृतक की मृत्यु हत्या थी।[पैरा 10] [380-एच] ए**

एच.

375

376 सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट [2023] 1 एस. सी. आर.

2. घटना का स्थान अभियुक्त व्यक्तियों का घर है। मृतक 'जे' एंड 'एम' के साथ-साथ पी. डब्ल्यू. 1 आरोपी व्यक्तियों के घर क्यों गए, इस बारे में अलग-अलग विवरण हैं। पीडब्लू. 1 के संस्करण के अनुसार, वह मजदूरों की तलाश में वहां गया था और उसके बाद उसे आरोपी व्यक्तियों ने पकड़ लिया क्योंकि **Rs.50 की ऋण राशि के संबंध में विवाद था। मृतक 'जे' की मृत्यु घोषणा के अनुसार, मृतक 'जे' और 'एम' घास (चारा) लेने के लिए वहाँ गए थे। जबकि पी. डब्ल्यू. 2 के साक्ष्य के अनुसार, जब वह बीड़ी खरीदने के लिए जगतपुर जा रहा था तो वह पी. डब्ल्यू. 1 से मिला और वे दोनों आरोपी व्यक्तियों की गली में गए। आई. ओ. ने स्वीकार किया है कि उन्होंने इस बात की जांच नहीं की कि आरोपी नंबर 1 (मृतक होने के कारण) को कैसे चोटें आईं। यह आरोपी नंबर 1 (मृतक के रूप में) द्वारा लिया गया विशिष्ट बचाव है कि जब वह अपने कमरे में बिस्तर पर लेटा हुआ था, तो दो व्यक्ति उसके कमरे में घुस गए और उनमें से एक ने उसके सिर पर लाठी चलाई, जिसके परिणामस्वरूप वह खून बहने लगा और फ्रैक्चर के कारण बेहोश हो गया। [पारस 16 और 17] [382-डी-जी; 383-ए-बी]**

बी.

सी.

डी.

3. अभिलेख पर रखी गई सामग्री से ऐसा प्रतीत होता है कि अभियोजन पक्ष साफ हाथों से नहीं आया है और उसने घटना की उत्पत्ति को दबाने का प्रयास किया है। मृत्यु घोषणा के साथ-साथ पी. डब्ल्यू. 1 और पी. डब्ल्यू. 2 के साक्ष्य में विरोधाभास हैं कि मृतक 'जे' और 'एम' किन परिस्थितियों में आरोपी व्यक्तियों के घर गए थे। अभियोजन पक्ष आरोपी नंबर 1 (मृतक होने के बाद से) को लगी चोट की व्याख्या करने में विफल रहा है। यह आरोपी नंबर 1 (मृतक होने के कारण) का विशिष्ट मामला है कि दो व्यक्ति उसके घर आए थे और उन्होंने उस पर लाठी से हमला किया था। इस संभावना से इनकार नहीं किया जा सकता है कि आरोपी

नंबर **1** (मृतक के रूप में) पर हमले से क्रोधित अभियुक्त व्यक्तियों ने आत्म नियंत्रण की शक्ति से वंचित रहते हुए, गंभीर और अचानक उकसावे से मृतक-'जे' और 'एम' पर हमला किया, जिसके परिणामस्वरूप उनकी मृत्यु हो गई। आर. पी. सी. की धारा **300** के अपवाद **I** को देखते हुए अपीलार्थियों संदेह के लाभ के हकदार हैं। इस प्रकार, अभियोजन पक्ष आर. पी. सी. की धारा **302** के तहत मामले को उचित संदेह से परे साबित करने में विफल रहा है। आर. पी. सी. की धारा **304** के भाग-**1** के तहत आर. पी. सी. की धारा **302** के तहत अपीलार्थियों पर लगाए गए दोषसिद्धि और सजा को आर. पी. सी. में परिवर्तित कर दिया जाता है। [पैरा **18,20** और **21**] [**383-बी-सी; 383-जी-एच; 384-ए-बी**]

ई.

एफ.

जी.

आपराधिक अपील न्यायनिर्णय:2010 की आपराधिक अपील No.1863।

एच.

377

मोहिंदर पाल और अन्य बनाम जम्मू-कश्मीर राज्य

ए.

सी. आर. एल. में जम्मू में जम्मू और कश्मीर उच्च न्यायालय के दिनांकित 05.06.2009 के निर्णय और आदेश से। 1991 का ए. सं. 9।

त्रिपुरारी रे, बी. एस. बिल्लौरिया, दिनेश कुमार गर्ग, धनंजय गर्ग, अभिषेक गर्ग, गुरमीत सिंह, अधिवक्तागण अपीलार्थियों के लिए।

शैलेश मडियाल, वैभव सभरवाल, अक्षय कुमार, अधिवक्तागण प्रत्यर्थी के लिए।

बी.

न्यायालय का निर्णय इसके द्वारा दिया गया था

बी. आर. गवई, जे.

1. वर्तमान अपील 5 जून, 2009 के फैसले और आदेश को चुनौती देती है, जो जम्मू में जम्मू और कश्मीर उच्च न्यायालय की खंड पीठ द्वारा 1991 की आपराधिक अपील संख्या 09 (संक्षेप में 'उच्च न्यायालय') में पारित विद्वान गया था, जिससे अपीलकर्ता-अभियुक्त द्वारा दायर अपील को खारिज कर दिया गया था और 23 मार्च, 1991 को कठुआ के विद्वान सत्र न्यायाधीश (संक्षिप्त में 'सत्र न्यायाधीश') द्वारा परीक्षण मामला संख्या 1 में दिए गए दोषसिद्धि और सजा के आदेश की पुष्टि की गई थी।

सी.

डी.

2. अपील प्रस्तुत करने वाले तथ्य इस प्रकार हैं:

आई. 16 मई, 1990 को, पुलिस स्टेशन, कठुआ (संक्षेप में 'पुलिस स्टेशन') को दोपहर लगभग 12 बजे विश्वसनीय जानकारी मिली कि आरोपी चंद (मृतक होने के कारण) और उनके बेटे दो युवाओं पर हमला कर रहे थे, जिन्हें उनके द्वारा जगतपुर, तहसील कठुआ में स्थित उनके घर में जबरन हिरासत में लिया गया था। दैनिक डायरी रजिस्टर में इसके बारे में एक प्रविष्टि की गई थी। उक्त सूचना मिलने पर, हेड कांस्टेबल-राज मल, कांस्टेबल चमन लाल और तीरथ सिंह के साथ अभियुक्त-अपीलार्थियों के घर पहुंचे, उन्होंने पाया कि मंजीत कुमार और जसविंदर गंभीर रूप से घायल थे और एक कमरे में बेहोश पाए गए थे। उन्हें तत्काल चिकित्सा सहायता प्रदान करने के लिए कठुआ के जिला अस्पताल ले जाया गया। सब-इंस्पेक्टर बसंत सिंह अस्पताल पहुंचे और डॉ. रेणु जामवाल की उपस्थिति में जसविंदर का बयान (Exh.PW-BS) दर्ज किया, जिन्होंने उसे बयान देने के लिए फिट घोषित किया। जसविंदर (EX.PW-BS) के बयान के आधार पर प्रथम सूचना रिपोर्ट (संक्षेप में 'एफ. आई. आर.') सं. 213/90 ए.

ई.

एफ.

जी.

एच.

378

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 1 एस सी आर।

जम्मू और कश्मीर राज्य रणबीर दंड संहिता (संक्षेप में 'आर. पी. सी.') की धारा 307/382/342 148/149 के तहत पुलिस स्टेशन में पंजीकृत। बाद में, मंजीत कुमार और जसविंदर दोनों ने दम तोड़ दिया। इसके बाद आर. पी. सी. की धारा 307 जोड़ी गई।

बी.

ii. मृतक जसविंदर के बयान (EX.PW-BS) में कहा गया है कि वह और मंजीत कुमार चारा लेने के लिए गाँव जगतपुर गए थे। जब वे आरोपी पक्ष के घर से लगी सड़क पर चल रहे थे, तो आरोपी लाल चंद, ब्यास, संत कुमार, रोशन, मदन लाल ने आरोपी चंद (मृतक होने के कारण) के अन्य बेटों के साथ उन्हें घर के अंदर घसीटा और लोहे की छड़ (सरिया), दरांती (दरांती)

और डंडों से उन पर हमला किया।उन्हें ऐसा पानी प्रदान किया गया जो पीने योग्य/स्वादहीन था।इसके अलावा, आरोपी संत कुमार ने मृतक की जेब से 300 रुपये चुरा लिए।

सी.

डी.

iii.अभियोजन पक्ष का मामला, संक्षेप में, यह है कि आरोपी नंबर 2-ब्यास राज ने मृतक के भाई-जसविंदर यानी P.W.1-Praveen कुमार से 50 रुपये की राशि उधार ली थी और P.W.1-Praveen कुमार ने घटना होने से 3-4 दिन पहले राशि की मांग की थी।घटना के दिन कुमार मजदूरों को लेने गाँव गया था।जब वह अपीलार्थियों के घर के करीब थे, तो उन्हें अंदर घसीटा गया और उन पर हमला किया गया।इसके बाद, उन्होंने उसे चारे के कमरे में बंद कर दिया और मंजीत कुमार और जसविंदर पर हमला किया।P.W.1-Praveen कुमार घटना स्थल से भागने में कामयाब रहे।P.W.1-Praveen कुमार के साथ P.W.2-Hardev सिंह भी थे और उपरोक्त घटना की घटना P.W.3-Chajju राम और कृष्ण चंद लम्बरदार को सुनाई गई थी।

ई.

एफ.

जी.

iv.जाँच अधिकारी (संक्षेप में 'आई. ओ. ') ने अंतिम रिपोर्ट प्रस्तुत की जिसमें कहा गया है कि उपरोक्त घटना से पहले अपीलार्थियोंओं द्वारा कुमार पर हमला किया गया था और उन्हें गलत तरीके से कैद कर लिया गया था, जब वे मजदूरों की तलाश में आए थे।

एच.

379

मोहिंदर पाल और अन्य बनाम जम्मू-कश्मीर राज्य [बी. आर. गवई, जे.]

ए.

v. अभियुक्त No.1-Lal चंद (मृतक होने के बाद से), अभियुक्त नंबर 2-ब्यास राज, अभियुक्त No.3-Mohinder पाल उर्फ रोशन, अभियुक्त No.4-Basant कुमार, अभियुक्त No.5-Om प्रकाश उर्फ डॉक्टर, अभियुक्त No.6-Kishan चंद और अभियुक्त No.7-Madan लाल पर मुकदमा चलाया गया।अभियुक्त संख्या 2 से 6 अभियुक्त No.1-Lal चंद (मृत होने के बाद से) के पुत्र हैं।16 अगस्त 1990 को सत्र न्यायाधीश द्वारा आर. पी. सी. की धारा 242,148 और 149 के तहत दंडनीय अपराधों के लिए आरोप तय किए गए।

बी.

vi.अपीलार्थियोंओं ने दोषी नहीं होने का अनुरोध किया और मुकदमा चलाने का दावा किया। अभियोजन पक्ष ने अभियुक्त-अपीलार्थियों के अपराध को घर लाने के लिए 19 गवाहों से पूछताछ की।उनका बचाव यह था कि अपीलार्थियोंओं ने निजी बचाव के अधिकार का प्रयोग किया क्योंकि अभियुक्त संख्या 1-लाल चंद (मृतक होने के कारण) पर दोनों मृतक द्वारा हमला किया गया था, जिन्हें काम पर रखा गया था क्योंकि पक्षों के बीच मुकदमा लंबित था।मुकदमे के समापन पर, सत्र न्यायाधीश ने आरोपी नंबर 5-ओम प्रकाश और आरोपी नंबर 4 और 7 को आर. पी. सी. की धारा 302,148 और 149 के तहत बरी कर दिया और उन्हें आजीवन कारावास और 5 लाख रुपये के जुर्माने की सजा सुनाई। 500 प्रत्येक और जुर्माने के भुगतान में चूक के मामले में तीन महीने की साधारण कारावास।vii. इससे व्यथित होकर, अपीलकर्ता-अभियुक्त ने उच्च न्यायालय में एक अपील दायर की।अभियुक्त नं. 1-अपील के लंबित रहने के दौरान लाल चंद की मृत्यु हो गई।अभियुक्त No.2-Bias राज फरार था और गैर-जमानती वारंट जारी करने के बाद भी उसकी उपस्थिति सुनिश्चित नहीं की जा सकी।5 जून, 2009 को उच्च न्यायालय ने विवादित फैसले के माध्यम से अपीलार्थियों द्वारा दायर अपील को खारिज कर दिया और उनकी दोषसिद्धि को बरकरार रखा और सत्र न्यायाधीश द्वारा उन्हें दी गई सजा की पुष्टि की।

सी.

डी.

ई.

एफ.

3. इससे व्यथित होकर वर्तमान अपील अभियुक्त No.3-Mohinder पाल, अभियुक्त No.7-Madan लाल और अभियुक्त No.4-Basant कुमार द्वारा दायर की गई थी।

जी.

4. हमने अपीलकर्ता-अभियुक्त की ओर से उपस्थित विद्वान अधिवक्ता श्री त्रिपुरारी रे और प्रतिवादी-जम्मू और कश्मीर राज्य की ओर से उपस्थित विद्वान अधिवक्ता श्री शैलेश मडियाल को सुना है।

एच.

380

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 1 एस सी आर।

ए.

5. श्री त्रिपुरारी रे प्रस्तुत करते हैं कि उच्च न्यायालय और सत्र न्यायाधीश ने अपीलकर्ता-अभियुक्त को दोषी ठहराने में घोर गलती की है। श्री रे प्रस्तुत करते हैं कि यह मृतक-मंजीत कुमार और जसविंदर थे जिन्होंने अपीलार्थियों के घर में अतिक्रमण किया और आरोपी नंबर 1-लाल चंद (मृत होने के बाद से) पर हमला किया। इसके बाद, अपीलार्थियों ने निजी बचाव के अपने अधिकार का प्रयोग किया और मृतक पर हमला किया। इसके अलावा, मृतक को लगी अधिकांश चोटें उनके पैरों पर थीं और गंभीर नुकसान पहुंचाने के इरादे से नहीं थीं।

बी.

6. श्री रे ने आगे कहा कि मरने की घोषणा यानी मृतक जसविंदर के बयान को देखने पर यह पता चलेगा कि डॉ. रेणु जामवाल ने कहा कि रोगी सूजन के कारण बयान पर हस्ताक्षर करने की स्थिति में नहीं था। उक्त कथन में रोगी की मानसिक/शारीरिक स्थिति के बारे में कोई विवरण नहीं दिया गया है कि क्या वह स्वस्थ मन और चेतना का है। इसके अलावा, डॉ. रेणु जामवाल ने स्वीकार किया कि रोगी 'न्यूनतम सचेत था और पूरी तरह से स्थान के लिए उन्मुख नहीं था'।

सी.

डी.

7. श्री रे ने आग्रह किया कि P.W.1-Praveen कुमार और P.W.3-Chhajju राम के साक्ष्य कई बिंदुओं पर मृत्यु घोषणा का खंडन करते हैं। मृत्यु घोषणा में यह नहीं कहा गया है कि कुमार पर हमला किया गया था और अपीलार्थियों के घर में बंद कर दिया गया था, यही कारण है कि दोनों मृतक अपीलार्थियों के घर गए थे, इसके बजाय यह केवल यह बताता है कि वे अपना काम खत्म कर रहे थे और अपीलार्थियों द्वारा उन पर हमला किया गया था। 8. प्रत्यर्थी-राज्य की ओर से पेश श्री शैलेश मडियाल प्रस्तुत करते हैं कि सत्र न्यायाधीश और उच्च न्यायालय ने समवर्ती रूप से यह अभिनिर्धारित किया है कि मृत्यु घोषणा एक ठोस साक्ष्य है। पी. डब्ल्यू.-एस. आई. बसंत सिंह और डॉ. रेणु जामवाल ने भी इसकी पुष्टि की है। इसकी पुष्टि कुमार और पी. डब्ल्यू. 2-हरदेव सिंह के साक्ष्य से भी होती है। अतः, इसे एक तरफ नहीं रखा जा सकता है।

ई.

एफ.

9. श्री मडियाल ने आगे कहा कि निजी रक्षा के अधिकार का उचित तरीके से प्रयोग किया जाना चाहिए। चोटों की प्रकृति से कई फ्रैक्चर का पता चलता है और उपयोग किए गए हथियार इंगित करते हैं कि अपीलार्थियों ने उन्हें मारने के इरादे से मृतक पर हमला किया था।

जी.

10. हमने अभिलेख पर रखी गई सामग्री का अध्ययन किया है। अभिलेख पर रखी गई सामग्री से, विशेष रूप से, पोस्ट-मॉर्टम रिपोर्ट से, इस बात पर विवाद नहीं किया जा सकता है कि मृतक की मृत्यु हत्या थी।

मोहिंदर पाल और अन्य बनाम जम्मू-कश्मीर राज्य [बी. आर. गवई, जे.]

ए.

11. जहाँ तक घटना का संबंध है, अभियोजन पक्ष मुख्य रूप से मृतक-जसविंदर की मृत्यु घोषणा के साथ-साथ पी. डब्ल्यू. 1-मृतक-जसविंदर के भाई प्रवीण कुमार और P.W.2-Hardev सिंह की मौखिक गवाही पर निर्भर करता है। मृतक-जसविंदर की मृत्यु घोषणा में अभियुक्त No.1-Lal चंद (मृत होने के कारण) के साथ-साथ अभियुक्त-अपीलार्थी भी शामिल हैं। यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि हालांकि मृत्यु घोषणा में यह कहा गया है कि पी. डब्ल्यू. 1-प्रवीण कुमार के साक्ष्य से मृतक-जसविंदर और आरोपी अपीलार्थियों के बीच कोई पूर्व शत्रुता नहीं थी, यह पता चलता है कि Rs.50 की राशि आरोपी ब्यास द्वारा P.W.1-Praveen कुमार से ली गई थी और विवाद उसी का भुगतान न करने के संबंध में था।

बी.

सी.

12. हालांकि कुमार का कहना है कि वह मजदूरों को लाने के लिए गाँव जगतपुर गया था और आरोपी अपीलार्थियों ने उसे पकड़ लिया और उसे पीटना शुरू कर दिया और उसके बाद उसे बांध दिया और बरामदे में बंद कर दिया, लेकिन मृतक-जसविंदर की मृत्यु घोषणा में इसका कोई उल्लेख नहीं है। कुमार ने अपने साक्ष्य में कहा है कि कुछ समय बाद, जब उनके भाई मंजीत और जसविंदर आरोपी व्यक्तियों के घर से लगी गली में जा रहे थे, तो आरोपी व्यक्तियों ने उन पर द्राट और लोहे की छड़ से हमला किया। उनके अनुसार, जब वे चोटों के कारण बेहोश हो गए, तो आरोपी व्यक्तियों ने उन्हें घर में घसीट लिया। वह कहता है कि उसने रस्सी खोली और भागने में कामयाब रहा। वह आगे कहता है कि जब वह तेली मोरे पहुंचा, तो उसने केवल कृष्ण को घटना की जानकारी दी और उसके बाद वे रिपोर्ट दर्ज कराने के लिए पुलिस चौकी गए।

डी.

ई.

13. पी. डब्ल्यू. 2-हरदेव सिंह ने अपने साक्ष्य में कहा है कि घटना के दिन वह थ्रेशर पर काम कर रहे थे, जो जगतपुर के पास स्थापित था और जब वह बीड़ी खरीदने जा रहे थे, तो रास्ते में उनकी मुलाकात कुमार से हुई। वह कहता है कि जब वे आरोपी व्यक्तियों के घर के पास गली में पहुंचे, तो आरोपी ओमप्रकाश, महेंद्र, मादी, ब्यास, संत, काशी और गार ने कुमार को पकड़ लिया और उसे पीट-पीट कर घर में ले गए। हालांकि यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि P.W.1-Praveen कुमार के साक्ष्य में P.W.2-Hardev सिंह की उपस्थिति के संबंध में कोई उल्लेख नहीं है।

एफ.

जी.

14. P.W.2-Hardev सिंह ने कहा कि इसके बाद वह वापस चला गया और जब वह जगतपुर नहर के पास पहुंचा तो वह मंजीत उर्फ बाबी और ए से मिला।

एच.

382

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 1 एस सी आर।

जसविंदर और उसने उन्हें कुमार से मिलने और उन पर हमला करने की घटना के बारे में सूचित किया। उन्होंने कहा कि इसके बाद वह मंजीत और जसविंदर दोनों के साथ घटना स्थल पर गए। उन्होंने कहा कि वह उनसे थोड़ी दूरी पर थे। उन्होंने कहा कि जब वे आरोपी व्यक्तियों के घर की गली में पहुंचे तो आरोपी व्यक्तियों ने दोनों मृतकों को भी पकड़ लिया और उन्हें पीटना शुरू कर दिया। वहाँ से, वह लखनपुर गया और परशोतम लाल को एक टेलीफोन कॉल किया कि मृतक व्यक्तियों को आरोपी व्यक्तियों द्वारा घर में हिरासत में लिया गया है। उनका कहना है कि जब वे आरोपी व्यक्तियों के घर पहुंचे तो पुलिस वहां पहले ही पहुंच चुकी थी।

बी.

सी.

15. P.W.3-Chhajju आरोपी व्यक्तियों के घर के पास रहने वाला राम मुकर गया है।

16. यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि घटना का स्थान अभियुक्त व्यक्तियों का घर है। मृतक-जसविंदर और मंजीत के साथ-साथ कुमार आरोपी व्यक्तियों के घर क्यों गए, इसके विवरण अलग-अलग हैं। P.W.1-Praveen कुमार के कथन के अनुसार, वह मजदूरों की तलाश में वहाँ गया था और उसके बाद उसे आरोपी व्यक्तियों ने पकड़ लिया क्योंकि Rs.50 की ऋण राशि के संबंध में विवाद था।

डी.

ई.

17. मृतक जसविंदर की मृत्यु घोषणा के अनुसार, मृतक जसविंदर और मंजीत घास (चारा) लेने के लिए वहाँ गए थे। जबकि P.W.2-Hardev सिंह के साक्ष्य के अनुसार, जब वह बीड़ी खरीदने के लिए जगतपुर जा रहा था तो वह P.W.1-Praveen कुमार से मिला और वे दोनों आरोपी व्यक्तियों की गली में गए। उन्होंने स्वीकार किया कि बीड़ी की दुकान उसी गली में नहीं

थी।उसके अनुसार, आरोपी व्यक्तियों द्वारा आईडी1 पर हमला करने के बाद, वह वहाँ से चला गया और रास्ते में मृतक जसविंदर और मंजीत उससे मिले और उसने उन्हें आईडी1 पर कुमार पर हमला करने और उसे बांधने की घटना के बारे में बताया।उसके बाद, वे तीनों गली गए जहाँ अभियुक्त व्यक्तियों का घर स्थित था।वहाँ अभियुक्त व्यक्तियों ने जसविंदर और मंजीत पर हमला किया और वह वहाँ से चला गया।यह भी ध्यान दिया जाना चाहिए कि उक्त घटना में आरोपी No.1-Lal चंद (मृतक होने के कारण) को भी चोटें आई थीं।अभियोजन पक्ष इसकी व्याख्या करने में विफल रहा है।आई. ओ. ने स्वीकार किया है कि उसने इस बात की जांच नहीं की कि आरोपी No.1-Lal चंद (मृतक होने के कारण) को कैसे चोटें आईं।यह विशिष्ट ए है

एफ.

जी.

एच.

383

मोहिंदर पाल और अन्य बनाम जम्मू-कश्मीर राज्य [बी. आर. गवई, जे.]

अभियुक्त No.1-Lal चंद (मृतक होने के कारण) द्वारा लिया गया बचाव कि जब वह अपने कमरे में बिस्तर पर लेटा हुआ था, तो दो व्यक्ति उसके कमरे में घुस गए और उनमें से एक ने उसके सिर पर लाठी चलाई, जिसके परिणामस्वरूप वह खून बहने लगा और फ्रैक्चर के कारण बेहोश हो गया।

18. अभिलेख पर रखी गई सामग्री से ऐसा प्रतीत होता है कि अभियोजन पक्ष साफ हाथों से नहीं आया है और उसने घटना की उत्पत्ति को दबाने का प्रयास किया है।मृत्यु घोषणा के साथ-साथ कुमार और सिंह के साक्ष्य में विरोधाभास हैं कि मृतक जसविंदर और मंजीत किन परिस्थितियों में आरोपी व्यक्तियों के घर गए थे।अभियोजन पक्ष अभियुक्त No.1-Lal चंद (मृतक होने के बाद से) को लगी चोट की व्याख्या करने में विफल रहा है।अभियुक्त व्यक्तियों द्वारा यह भी सुझाव दिया गया था कि अभियुक्तों की मोहन लाल और केवल कृष्ण के साथ दुश्मनी थी और मृतक के साथ-साथ पी. डब्ल्यू. 1-प्रवीण कुमार और P.W.2-Hardev सिंह को उनके द्वारा हमला करने वाले अभियुक्त No.1-Lal चंद (मृतक होने के कारण) को भेजा गया था।इसमें कोई संदेह नहीं है कि इससे इनकार किया जाता है।

बी.

सी.

डी.

19. अभियुक्त का बचाव यह प्रतीत होता है कि मृतक-जसविंदर और मंजीत के साथ-साथ कुमार और सिंह की सगाई मोहन लाल और केवल कृष्ण ने पिछली दुश्मनी के कारण बदला लेने के लिए की थी।

ई.

20. जैसा कि ऊपर पहले ही चर्चा की जा चुकी है, घटना का स्थान अभियुक्त No.1-Lal चंद (मृतक होने के कारण) का घर है। शेष छह अभियुक्तों में से 5 उसके बेटे हैं। मृतक जसविंदर और मंजीत अपीलार्थियों के घर कैसे और किन परिस्थितियों में गए, इस बारे में भौतिक विरोधाभास हैं। मृत्यु घोषणा के साथ-साथ P.W.1-Praveen कुमार और P.W.2-Hardev सिंह के साक्ष्य में दिया गया संस्करण पूरी तरह से अलग है। अभियोजन पक्ष अभियुक्त No.1-Lal चंद (मृतक होने के बाद से) को लगी चोटों को साबित करने में विफल रहा है। यह आरोपी No.1-Lal चंद (मृतक होने के कारण) का विशिष्ट मामला है कि दो व्यक्ति उसके घर आए थे और उन्होंने उस पर लाठी से हमला किया था। इस संभावना से इनकार नहीं किया जा सकता है कि आरोपी चंद (मृतक के रूप में) पर हमले से क्रोधित अभियुक्त व्यक्तियों ने आत्म-नियंत्रण की शक्ति से वंचित रहते हुए, गंभीर और अचानक उकसावे से, मृतक-जसविंदर और मंजीत पर हमला किया, जिसके परिणामस्वरूप उनकी मृत्यु हो गई। हम पाते हैं कि अपीलार्थियों ए में संदेह के लाभ के हकदार हैं।

एफ.

जी.

एच.

384

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 1 एस सी आर।

आर. पी. सी. की धारा 300 के अपवाद I का दृष्टिकोण। इस प्रकार, हमारा विचार है कि अभियोजन पक्ष आर. पी. सी. की धारा 302 के तहत मामले को उचित संदेह से परे साबित करने में विफल रहा है।

21. आर. पी. सी. की धारा 304 के भाग-1 के तहत आर. पी. सी. की धारा 302 के तहत अपीलार्थियों पर लगाए गए दोषसिद्धि और सजा को आर. पी. सी. में परिवर्तित कर दिया जाता है। अपीलार्थी पहले ही लगभग दस साल की सजा काट चुके हैं, इसलिए हम पाते हैं कि पहले से दी गई सजा से उद्देश्य पूरा होगा। अपीलार्थियों के जमानत बांडों को खारिज कर दिया जाएगा।

22. उपरोक्त शर्तों में अपील की आंशिक रूप से अनुमति है।

बी.

सी.

बिभूति भूषण बोस

अपील की आंशिक रूप से अनुमति है।

(सहायक: शुभांशु दास, एलसीआरए)

डी.

ई.

एफ.

जी.

एच.